निस्केयर
NISCAIR

नवम्बर 2010

सम्पादक
प्रदीप शर्मा
सह सम्पादक
डा. बालक राम
प्रोडक्शन अधिकारी
कौशल किशोर
गणेश साहनी
कला अधिकारी
नीरू विजन
योगेश कुमार आनंद
फोटोग्राफी
एल. एन. बांगुर
कम्पोजिंग
संतोष खुराना, मीरा देवी
वरिष्ठ बिक्री एवं विज्ञापन अधिकारी
परवेज़ अली खान
वरिष्ठ बिक्री एवं वितरण अधिकारी
लोकेश कुमार चोपड़ा

नवम्बर 2010
विज्ञान प्रगति

'द वेल्थ ऑफ इण्डिया — रॉ मैटीरियल्स'

द वेल्थ ऑफ इण्डिया -- रॉ मैटीरियल्स को देखकर विगत इतिहास और गरिमा का वह दृश्य ध्यान में आता है जब सुदूर देशों के लोग सम्पति की खोज करते हुये सिन्धु वासियों की ओर आकृष्ट होते रहे। इस पर भी आज पूरा विश्व भारत को निर्धन लोगों का देश मानता है। खैर, वे कुछ भी कहें भारत वास्तव में समृद्ध है और उसके पास सम्पदा है। इतनी सम्पदा के होते हुए भी यहां के वासी निर्धन हैं। हमारे समक्ष प्रमुख समस्या, धरती के गर्भ में छिपी और प्रकट सम्पदा को, भारतीय नागरिकों के लाभार्थ दोहन करने की है। प्रस्तुत ग्रथ एक प्रकार से विश्वकोश अथवा कोश-स्वरूप है। ऐसे कोश शायद ही पढ़ने में रोचक होते हों, किन्तु यह एक ऐसा कोश है जो मुझे अत्यंत ग्राह्य लगा है और जिसने मुझे विचारों के नये आयाम दिये हैं। इसके चित्र सुन्दर हैं।

मुझे इसमें कोई संदेह नहीं कि अनेक विद्वानों और विशेषज्ञों के कठिन परिश्रम से तैयार किया गया यह कोश नये भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। इस कोश द्वारा, सामान्य नागरिकों को, इस मनोहारी देश और इसकी प्रचुर सम्भावनाओं में रुचि उत्पन्न होगी और उनकी ज्ञानवृद्धि के लिये भी यह अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

• **जवाहरलाल नेहरू**

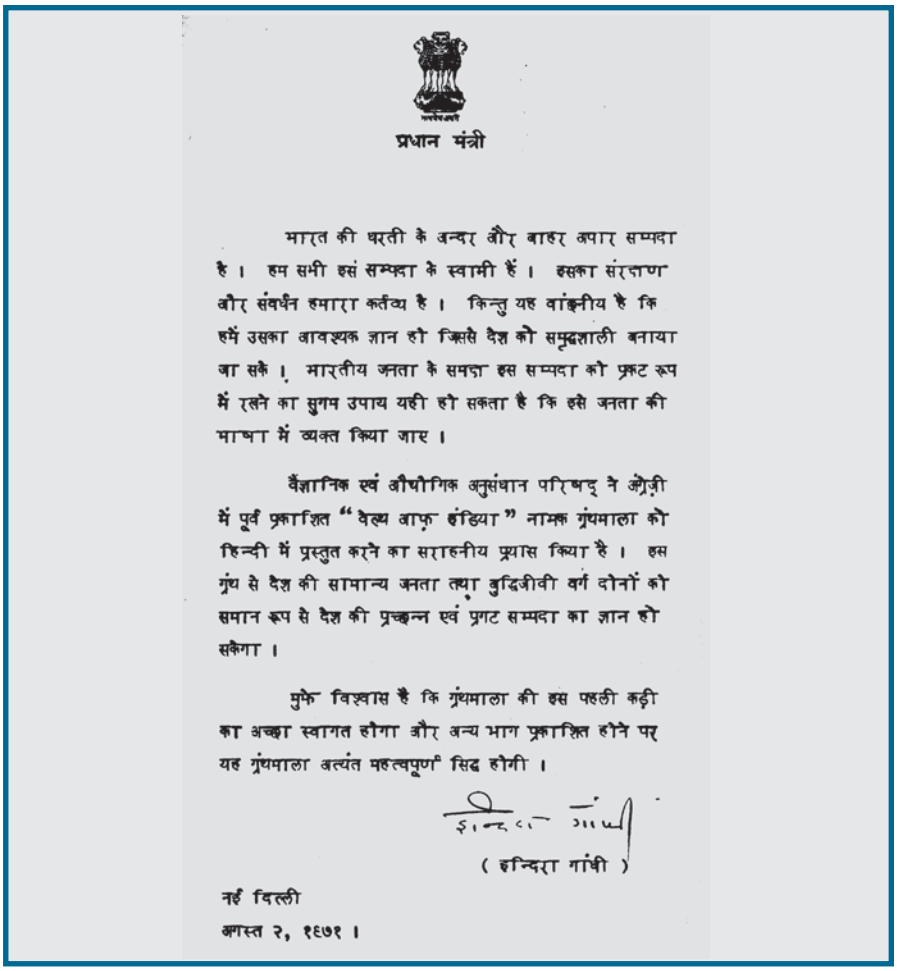

प्रधान मंत्री

भारत की धरती के अन्दर और बाहर अपार सम्पदा है। हम सभी इस सम्पदा के स्वामी हैं। इसका संरक्षण और संवर्धन हमारा कर्तव्य है। किन्तु यह वांछनीय है कि हमें उसका आवश्यक ज्ञान हो जिससे देश को समृद्धशाली बनाया जा सके। भारतीय जनता के समक्ष इस सम्पदा को प्रकट रूप में रखने का सुगम उपाय यही हो सकता है कि इसे जनता की भाषा में व्यक्त किया जाए।

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद् ने अंग्रेज़ी में पूर्व प्रकाशित "वेल्थ आफ़ इंडिया" नामक ग्रंथमाला को हिन्दी में प्रस्तुत करने का सराहनीय प्रयास किया है। इस ग्रंथ से देश की सामान्य जनता तथा बुद्धिजीवी वर्ग दोनों को समान रूप से देश की प्रच्छन्न एवं प्रगट सम्पदा का ज्ञान हो सकेगा।

मुझे विश्वास है कि ग्रंथमाला की इस पहली कड़ी का अच्छा स्वागत होगा और अन्य भाग प्रकाशित होने पर यह ग्रंथमाला अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होगी।

इन्दिरा गांधी

(इन्दिरा गांधी)

नई दिल्ली
अगस्त २, १९७१।

मूल्य
एक अंक : 20.00 रुपये
एक वर्ष : 200.00 रुपये
दो वर्ष : 380.00 रुपये
तीन वर्ष : 540.00 रुपये
विदेशी वार्षिक सदस्यता : 65$
शिकायत : 25841647
ई-मेल : lkc@niscair.res.in

सम्पादकीय : 25846301, 04-07/370; 25841769
प्रोडक्शन : 25847353, 25846301, 04-07/217, 284
विज्ञापन : 25845359, बिक्री : 25841647, 25846301, 04-07/335, 295 फैक्स : 25847062
ई-मेल : vp@niscair.res.in
वेब साइट : http:/www.niscair.res.in

© राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान
लेखकों के कथनों और मतों के लिये राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (सी एस आई आर), डॉ. के. एस. कृष्णन् मार्ग, नई दिल्ली - 110 012 उत्तरदायी नहीं है।
पत्रिका से संबंधित सभी विवाद दिल्ली न्यायालय द्वारा ही निपटाये जायेंगे।